

हिन्दी साहित्य भूख एवं राजनीति

प्रोफेसर संतोष मोटवानी

आर के तलरजा महाविद्यालय

उल्हासनगर, महाराष्ट्र

साहित्य मनुष्य के संपूर्ण जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। मनुष्य की हर बात को वह अपने में समेटता है। जिसमें संस्कृति रीति रिवाज रहन-सहन आदि सब कुछ आ जाता है। भूख और राजनीति का बहुत गहरा संबंध है। जिसका बड़ा ही सुंदर चित्र सुदामा पांडे 'धूमिल' जी ने अपनी 'संसद और रोटी' कविता में किया है-

"एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

में पृच्छता हूँ—

'यह तीसरा आदमी कौन है?'

मेरे देश की संसद मौन है।"

भूख, राजनीति और साहित्य का रिश्ता बहुत गहरा है। इसके मुख्य रूप हैं: नीतिगत विफलताएं, विरोध प्रदर्शन के रूप में भूख हड़ताल, और सत्ता हासिल करने या बनाए रखने के लिए भोजन का हथियार के रूप में उपयोग। भूख और नीतिगत विफलता दुनिया में भोजन की कमी नहीं है, बल्कि गरीबों तक उसकी पहुंच न होना राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की नाकामी है। युद्ध या संघर्ष के इलाकों में सरकारों द्वारा नागरिकों को भूखा रखना एक राजनीतिक रणनीति बन जाता है। सरकारी योजनाओं, वितरण प्रणालियों और सब्सिडी का नियंत्रण पूरी तरह से राजनीतिक प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है। राजनीतिक हथियार के रूप में भूख हड़ताल इतिहास में नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी मांगों मनवाने के लिए उपवास या भूख हड़ताल को एक बड़े राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। भगत सिंह और उनके साथियों ने जेल में राजनीतिक अधिकारों के लिए लंबी भूख हड़ताल की थी। भाषा के आधार पर राज्यों के गठन (जैसे पोट्टी श्रीरामुलु का अनशन) के समय भी भूख हड़ताल ने राजनीतिक नक्शा बदल दिया था।

साहित्य में इसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। कई कविताएं, कहानियां और उपन्यास इन बातों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं।

भूख सबसे पहले दिमाग खाती है

उसके बाद आँखें

फिर जिस्म में बाक़ी बची चीज़ों को

छोड़ती कुछ भी नहीं है भूख

वह रिश्तों को खाती है

माँ का हो बहन या बच्चों का

बच्चे तो उसे बेहद पसंद हैं

जिन्हें वह सबसे पहले

और बड़ी तेज़ी से खाती है

बच्चों के बाद फिर बचता ही क्या है।

(नरेश सक्सेना)

प्रेमचंद नागार्जुन सुमित्रानंदन पंत दिनकर आदि बहुत से ऐसे साहित्यकार रहे हैं जिन्होंने अपने साहित्य में इसका खुलकर चित्रण किया है। साहित्य में इसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। कई कविताएं, कहानियां और उपन्यास इन बातों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं। प्रेमचंद, नागार्जुन, सुमित्रानंदन पंत, दिनकर आदि बहुत से ऐसे साहित्यकार रहे हैं जिन्होंने अपने साहित्य में इसका खुलकर चित्रण किया है।

प्रसिद्ध जनकवि नागार्जुन की कविता 'अकाल और उसके बाद' मात्र आठ पंक्तियों की एक अत्यंत भावना से पूर्ण रचना है, जिसमें अकाल के दिनों की भयानक उदासी और अकाल के बाद घर में अन्न आने पर उपजी खुशियों का जीवंत चित्रण किया गया है। अकाल के समय घर में खाने के लिए दाना नहीं होता। चूल्हा नहीं जलता तो लगता है मानो वह रो रहा हो, और अनाज न पीसने से चक्की उदास पड़ी रहती है। भूखी कुतिया भी उसी बेजान चूल्हे-चक्की के पास पड़ी रहती है। दीवारों पर छिपकलियाँ भोजन की तलाश में घूमती हैं और कमजोर हो चुके चूहों की हालत भी पस्त होती है। जब कुछ दिनों बाद घर में अनाज (दाने) आता है, तो सूने आँगन से फिर से धुआँ उठने लगता है, सबका जीवन पटरी पर लौटने लगता है। अन्न को देखकर घर के सभी लोगों की आँखें खुशी से चमक उठती हैं और भोजन की उम्मीद में कौवा भी अपने पंख खुलाने लगता है।

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद

धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कोए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद ('अकाल और उसके बाद')

प्रसिद्ध लेखक यशपाल की कहानी 'दुःख का अधिकार' का मूल उद्देश्य भूख के माध्यम से समाज में व्याप्त दिखावे, ऊँच-नीच के भेदभाव और संकीर्ण मानसिकता को उजागर करना है। यह बताती है कि दुःख की अनुभूति सबको समान होती है, लेकिन गरीबों को समाज की बेरुखी के कारण शोक मनाने का पूरा अवसर तक नहीं मिलता। कहानी की शुरुआत एक ऐसी घटना से होती है जहाँ फुटपाथ पर एक गरीब बुढ़िया खरबूजे बेचने बैठी है और फफक-फफक कर रो रही है। अमीरों का संवेदनहीन समाज : राहगीर और संभ्रांत (अमीर) लोग उसके रोने का कारण जाने बिना उसे बुरा-भला कहते हैं और उसकी जाति व धर्म पर सवाल उठाते हैं। लोग उसकी गरीबी और पहनावे को देखकर उसके चरित्र का गलत अंदाजा लगाते हैं। लेखक को भी एक दुकान वाले से पता चलता है कि बुढ़िया के 23 वर्षीय जवान बेटे की साँप के काटने से मौत हो गई है।

घर में कमाने वाला एकमात्र वही लड़का था। उसकी असमय मौत के बाद बुढ़िया के घर में उसकी बहू और छोटे-छोटे बच्चे भूखे तड़प रहे हैं। घर में इतना भी अनाज या पैसा नहीं है कि बुढ़िया अपने बेटे का ढंग से अंतिम संस्कार कर सके। बेटे की मृत्यु के तुरंत बाद परिवार के भरण-पोषण के लिए उस बेचारी बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लिए बाज़ार में बैठना पड़ता है। अमीरों के अनुसार उसका इस तरह बाज़ार में बैठना और रोना एक तमाशा लगता है। लेखक को अपनी अच्छी पोशाक (पहनावे) के कारण समाज के निचले वर्ग की सच्चाई और मजबूरी समझने में थोड़ी मुश्किल होती है। अंततः, लेखक को यह अहसास होता है कि जिस तरह एक अमीर परिवार के व्यक्ति को दुःख मनाने का पूरा हक, साधन और समय मिलता है, उतना ही अधिकार उस गरीब बुढ़िया का भी है, लेकिन मजबूरी उसे रोने भी नहीं देती।

इसी तरह अन्य साहित्यकारों ने भी भूख का अपने साहित्य में विभिन्न कोणों से वर्णन और चित्रण किया है। हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में 'भोजन' केवल एक सामान्य आवश्यकता नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आर्थिक विषमता, वर्ग-संघर्ष, जाति-व्यवस्था, और सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाने का एक अत्यंत सशक्त माध्यम है। प्रेमचंद ने अपने यथार्थवादी साहित्य में पेट की भूख और खान-पान को आधार बनाकर समाज का गहरा विवरण दिया है। उनके साहित्य में भोजन और अन्य संबंधित पहलुओं का विवरण निम्नलिखित प्रमुख आधारों पर किया जा सकता है :

आर्थिक विषमता और वर्ग-संघर्ष: प्रेमचंद के साहित्य में भोजन समाज के धनी और निर्धन वर्गों के बीच की खाई को उजागर करता है। अमीरों की दावतें: 'गोदान' और अन्य उपन्यासों में जमींदारों और साहूकारों की दावतों का विस्तृत वर्णन है, जहाँ घी, दूध, और मिठाइयों की भरमार होती है। इसके विपरीत, शोषित वर्ग (जैसे 'गोदान' के होरी या 'पूस की रात' के हल्कू) को भरपेट रूखी-सूखी रोटी या सवा सेर चने भी नसीब नहीं होते। प्रसिद्ध कहानी 'कफन' में घीसू और माधव जैसे पात्रों का कई दिनों तक भूखे रहना, और अंततः अपनी मजबूरी या बेबसी में मृत पत्नी के कफन के पैसे से पूड़ियाँ और कचौड़ियाँ खाना, उनकी लाचारी और नैतिक पतन दोनों को दर्शाता है।

प्रेमचंद ने भोजन या उसकी कमी को मानव स्वभाव के बदलने और संवेदनाओं के शून्य हो जाने के रूप में भी चित्रित किया है। जब इंसान लगातार कई दिनों तक भूखा रहता है, तो सामाजिक रीति-रिवाज और पारिवारिक रिश्ते भी भोजन की तुलना में गौण हो जाते हैं।

कृषि-संस्कृति और प्राकृतिक निर्भरता प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों और उपन्यासों का आधार भारतीय किसान है, जिनकी खाद्य संस्कृति सीधे प्रकृति और उनकी मेहनत से जुड़ी होती है। 'पूस की रात' में हल्कू खेत में आग तापकर और कंड़े खाकर अपनी रात गुजारता है। 'दो बैलों की कथा' में बैलों के प्रति अनाथ बच्ची का प्रेम उन्हें रोटियाँ खिलाकर व्यक्त होता है, जो दिखाता है कि प्रेम का प्रसाद कैसे अभाव में भी जीवन शक्ति देता है।

मानवीय संवेदना और दया का आधार (सद्भाव) उनके साहित्य में भोजन का वितरण प्रेम, करुणा और पश्चाताप का प्रतीक भी है। 'बूढ़ी काकी' कहानी में रूपा जब अपनी गलती का अहसास करती है, तो वह बूढ़ी काकी को स्वादिष्ट पकवानों का थाल परोसती है, जिससे काकी को असीम आनंद मिलता है। 'पंच परमेश्वर' और अन्य कहानियों में त्यौहारों और विशेष अवसरों (जैसे भोज) पर पूरे समाज का एकजुट होना भारतीय सामुदायिक संस्कृति को दर्शाता है। अंधविश्वास और रूढ़ियों का चित्रण भोजन और दान-धर्म के नाम पर धर्म के ठेकेदारों और पुरोहितों द्वारा गरीबों के शोषण का भी चित्रण प्रेमचंद ने किया है। कहानी 'बाबाजी का भोग' में गरीब किसान रामधन के घर अनाज का एक दाना न होने पर भी, साधु के लिए घी और पकवानों की व्यवस्था करना भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास और पाखंड को व्यंग्यात्मक रूप से उजागर करता है। कुल मिलाकर, प्रेमचंद ने भोजन को केंद्र में रखकर शोषितों की करुण पुकार, सामाजिक भेदभाव, और भारतीय ग्रामीण संस्कृति के जीवंत चित्र प्रस्तुत किए हैं।

भूख के कई रूप हम देखते हैं। पद प्राप्ति की भूख भी महत्वपूर्ण है। और पदोन्नति की भूख भी हम साहित्य एवं समाज में देख सकते हैं। जैसे भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' में इसे विधिवत देखा जा सकता है जहाँ नायक अपनी माँ का प्रयोग कहां करता है ? उसका बाँस उसकी माँ के हाथ से बनी हुई फुलकारियों को पसंद करता है। तब माँ को अपने साथ रखने की कामना भी करता है नहीं तो अपने माँ को बाहर फेंक देने की सोच रहा था।

एक गरीब आदमी की भूख को लोग नहीं समझते उसे ताने तो मरते हैं। लेकिन उसकी और उसके परिवार की भूख के कारण जो हालत हो रही है उस पर कोई सोचता ही नहीं। साहित्य इसी भूख को हमें दिखाता है। और सोचने को मजबूर कर देता है। यशपाल ने इसी बात को दुख कहानी के माध्यम से भी हमारे सामने रखा है। जहाँ बड़े परिवार में लोग छोटी-छोटी बातों को दुख मानते हैं और दुखी हो जाते हैं। वहीं एक गरीब परिवार का लड़का भूख के कारण रात्रि ठंडी रात में कुछ समझ पकोड़े बेचने के लिए रास्ते पर खड़ा है जहाँ उसकी ठंडी हवा हालत खराब कर रही है। लेकिन भूख के कारण माँ को पैसे देने हैं। इस कारण वह उस ठंडी रात में भी सौदा लेकर रास्ते पर खड़ा है।

इस तरह हम देखते हैं कि भूख का संबंध राजनीति और साहित्य से बड़ा गहरा है। साहित्य इस संबंध को उजागर करने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। भूख के वास्तविक स्वरूप से हमें अवगत कराता है।

संदर्भ ग्रंथ-

प्रेमचंद और उनका युग – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी,

C

हिंदी कहानी का इतिहास – गोपाल राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रेमचंद और भारतीय समाज – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रेमचंद का रचना संसार – संपा. डॉ. सुशीला गुप्ता, हिन्दुस्तानी प्रचारसभा, मुंबई

भूख

, '

समुद्र पर हो रही है बारिश

,

काव्य संग्रह

-

नरेश सक्सेना

,

राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

,

अकाल और उसके बाद

-

नागार्जुन

चीफ की दावत

, '

पहला पाठ

,

नामक कहानी संग्रह

-

भीष्म साहनी

,

राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

,

दुःख का अधिकार

,

कहानी-संग्रह

,

फूलों का कुर्ता

' - यशपाल ,

लोकभारती प्रकाशन

“

दुःख

” - यशपाल ,

लोकभारती प्रकाशन

,

रोटी और संसद

,

काव्यसंग्रह

,

कल सुनना मुझे

-'

सुदामा पांडेय

।

धूमिल

!-

युगबोध प्रकाशन

,

वाराणसी